चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	20.11.2020	02	04-05

एचएयू-लुवास में कक्षाएं अभी शुरू नहीं

जागरण संवाददाता, हिसार : सरकारी और प्राइवेट स्कूलों में कक्षाएं शुरू कर दी गई हैं। इधर कोरोना के बढ़ते मामलों ने फिर से लोगों को डरा दिया है। अब अभिभावकों को अपने नौनिहालों की चिंता हो रही है। लोग कहने लगे हैं कि स्कूलों को खोलने में जल्दबाजी दिखाई गई है। इधर चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय और लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय में अभी नियमित कक्षाएं शुरू करने को लेकर कोई फैसला नहीं लिया गया है। वहीं स्कूलों में कक्षाएं शुरू कर दी गई हैं। नवंबर माह में कोरोना के बढ़ते मामलों को देखते हुए अब प्रशासन भी अलर्ट मोड पर आ गया है।

डीसी के आदेश- बच्चों का हो कोविड टेस्ट : जिस प्रकार से प्रदेश के स्कूलों में कोरोना संक्रमित बच्चों की संख्या बढ़ रही है, इसको देखते हुए हिसार प्रशासन ने शिक्षा विभाग को तत्काल स्कूलों में बच्चों के कोविड टेस्ट कराने के निर्देश दिए हैं। आनन-फानन में शिक्षा विभाग ने वीरवार को सुशीला भवन स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में 60 बच्चों का टेस्ट भी करा दिया। अब स्कूलों में कोविड टेस्ट लगातार चलेगा, इसके लिए स्वास्थ्य विभाग की मौजूदा समय में एक टीम जांच कर रही है। बच्चों के कोविड टेस्ट कराने को लेकर प्रशासन की मंशा है कि वह आंकलन कर सकें कि कहीं स्कूलों में कोरोना वायरस का प्रसार तो नहीं हो रहा है।

एचएयू दिसंबर में करेगा विचार

शहर में गुरु जंभेश्वर तकनीकि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में कक्षाएं शुरू कर दी गई हैं, मगर एचएयू ने अभी तक कक्षाएं शुरू करने को लेकर कोई फैसला नहीं लिया। इसके दो बड़े कारण हैं। जिसमें पहले तो अभी स्नातक कोर्स में दाखिले की प्रक्रिया चल रही है। वहीं स्नातकोतर में दाखिले पूरे हुए तो ऑनलाइन ही पढ़ाई को सुचारू किया जा रहा है। इसको लेकर एचएयू के कुलपति प्रो. समर सिंह का कहना है कि दिसंबर माह में विश्वविद्यालय के अधिकारियों के साथ मंत्रणा करेंगे, इसके बाद ही रेगुलर कक्षाएं चलाने के बारे में विचार करेंगे। इस माह तो कोरोना काफी फैलता दिख रहा है, इसलिए एहतियात बरते हुए हैं।

लुवास में 24 दिसंबर तक परीक्षाएं, फिर करेंगे विचार

लुवास में 24 दिसंबर तक परीक्षाएं हैं, इसके साथ ही चौथे सेमेस्टर के विद्यार्थियों को बुलाया गया है। वहीं रेगुलर कक्षाएं शुरू करने को लेकर अभी विश्वविद्यालय में किसी प्रकार की तैयारी नहीं चल रही है। विवि के अधिकारियों का यही कहना है कि जब परीक्षा बाद ही कुछ कहा जा सकता है। लुवास के रजिस्ट्रार डा. हरीश गुलाटी ने बताया कि अभी तक हमारा ध्यान परीक्षाओं पर केंद्रित है। इसके बाद बैठक में कुछ निर्णय लेंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	20.11.2020	02	02-05

सलाह एचएयू में मधुमक्खी पालन विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण का समापन

सस्ता व सरल व्यवसाय है मधुमक्खी पालन

जागरण संवाददाता, हिसार : मधुमक्खी पालन बहुत ही सस्ता और सरल व्यवसाय है। इसे बहुत ही कम पैसों से शुरू किया जा सकता है। यह एक ऐसा व्यवसाय है जिसे नवयुवक व युवतियां कोई भी आसानी से कर सकता है। इसके लिए जमीन की भी विशेष रूप से कोई ज्यादा जरूरत नहीं होती है। इसलिए भूमिहीन किसान भी इसे आसानी से कर सकते हैं।

यह बातें चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में कीट विज्ञान विभाग के सहायक निदेशक डा. भूपेंद्र सिंह ने कही। वह संस्थान की ओर से मधुमक्खी पालन विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे।

प्रतीकात्मक तस्वीर • जागरण आर्काइव

मधुमक्खी पालन के लिए विशेष रूप से जमीन की भी ज्यादा जरूरत नहीं होती

विज्ञानियों ने प्रशिक्षणार्थियों शहद निकालने और प्रशिक्षण की दी जानकारी

प्रशिक्षण के दौरान डा. तरुण वर्मा ने बताया कि मधुमक्खी पालन शुरू करने के लिए अक्टूबर-नवंबर का महीना सबसे सही समय है। उन्होंने प्रतिभागियों को मधुमक्खी पालन के लिए जरूरी उपकरणों के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। डा. सुरेंद्र ने बताया कि मधुमक्खी पालन से हमें शहद तो मिलता ही है, लेकिन इसके अलावा मधुमक्खियां परागण क्रिया द्वारा फसलों की पैदावार को भी कई गुणा बढ़ाकर किसानों को अप्रत्यक्ष रूप से लाभ पहुंचाती है। डा. दलीप ने बताया कि जब मधुमक्खियों की संख्या कम हो जाती है तो दो डिब्बों को मिलाकर एक डिब्बा बना सकते हैं। इसके साथ ही उन्होंने मधुमक्खियों को नुकसान पहुंचाने वाले कीट व बीमारियों तथा उनकी रोकथाम के बारे में विस्तार से बताया। डा. निर्मल कुमार ने शहद को अच्छे दाम पर बेचने के गुर सिखाए। प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न जिलों सहित अन्य प्रदेशों के 40 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

महिलाओं को प्रशिक्षण देगा एचएयू

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में प्रदेश की अनुसूचित जाति व जनजाति की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने व स्वरोजगार स्थापित करने के लिए दिसंबर माह में विभिन्न प्रशिक्षणों का आयोजन किया जाएगा। प्रशिक्षणों का आयोजन सिरसा रोड स्थित केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान के सहयोग से विवि के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में होगा। संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डा. अशोक गोदारा ने बताया कि इन प्रशिक्षणों में शामिल होने के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 27 नवंबर है। ये प्रशिक्षण विस्तार शिक्षा निदेशक डा. आरएस हुड्डा की देखरेख में आयोजित किए जाएंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर,	20.11.2020	05	07-08
अमर उजाला	20.11.2020	02	05

मधुमक्खी पालन बहुत ही सस्ता व्यवसायः डॉ. भूपेंद्र सिंह

हिसार | मधुमक्खी पालन बहुत ही सस्ता और सरल व्यवसाय है, जो बहुत ही कम पैसों से शुरू किया जा सकता है। यह एक ऐसा व्यवसाय है जिसे युवक व युवतियां कोई भी आसानी से कर सकता है। इस व्यवसाय के लिए जमीन की भी विशेष रूप से कोई ज्यादा जरूरत नहीं होती है। इसलिए भूमिहीन किसान भी इसे आसानी से कर सकते है। ये विचार एचएयू के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में कीट विज्ञान विभाग के सहायक निदेशक डॉ. भूपेंद्र सिंह ने व्यक्त किए। वे संस्थान की ओर से मधुमक्खी पालन विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे।

सस्ता व सरल व्यवसाय है मधुमक्खी पालन : डॉ. भूपेंद्र

हिसार। मधुमक्खी पालन बहुत ही सस्ता और सरल व्यवसाय है, जो बहुत ही कम पैसों से शुरू किया जा सकता है। यह बात हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में कीट विज्ञान विभाग के सहायक निदेशक डॉ. भूपेंद्र सिंह ने कही। वे संस्थान की ओर से मधुमक्खी पालन विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। दूसरी ओर एचएयू प्रदेश की अनुसूचित जाति व जनजाति की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने व स्वरोजगार स्थापित करने के लिए दिसंबर में विभिन्न प्रहिक्षणों का आयोजन करेगी। सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इन प्रशिक्षणों में शामिल होने के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 27 नवंबर है। ब्यूरो

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	**20.11.2020**	——	--

एचएयू में मधुमक्खी पालन विषय पर 3 दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण का समापन

हिसार, (सोढी) : मधुमक्खी पालन बहुत ही सस्ता और सरल व्यवसाय है जो बहुत ही कम पैसों से शुरू किया जा सकता है। यह एक ऐसा व्यवसाय है जिसे नवयुवक व युवतियां कोई भी आसानी से कर सकता है। इस व्यवसाय के लिए जमीन की भी विशेष रूप से कोई ज्यादा जरूरत नहीं होती है। इसलिए भूमिहीन किसान भी इसे आसानी से कर सकते है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में कीट विज्ञान विभाग के सहायक निदेशक डॉ. भूपेंद्र सिंह ने कहे। वे संस्थान की ओर से मधुमक्खी पालन विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा की देखरेख व मार्गदर्शन में किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि मधुमक्खी पालन से हमें न केवल शहद बल्कि दूसरे पदार्थ जैसे मोम, प्रोपोलिस, पराग, रॉयल जैली तथा मौन विष भी मिलते है जिनसे मधुमक्खी पालक अतिरिक्त आय ले सकते है। संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने प्रशिक्षणार्थियों से आह्वान किया कि प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान से वे लघु स्तर पर मधुमक्खी पालन व्यवसाय शुरू करके अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकते है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूं	**20.11.2020**	——	--

बहुत ही सस्ता व सरल व्यवसाय मधुमक्खी पालन : डॉ. सिंह

■ एचएयू में मधुमक्खी पालन विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण का समापन

हिसार (सच कहूं न्यूज)। मधुमक्खी पालन बहुत ही सस्ता और सरल व्यवसाय है जो बहुत ही कम पैसों से शुरु किया जा सकता है। यह एक ऐसा व्यवसाय है जिसे नवयुवक व युवतियां कोई भी आसानी से कर सकता है। इस व्यवसाय के लिए जमीन की भी विशेष रुप से कोई ज्यादा जरुरत नहीं होती है। इसलिए भूमिहीन किसान भी इसे आसानी से कर सकते है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में कीट विज्ञान विभाग के सहायक निदेशक डॉ. भूपेंद्र सिंह ने कहे। वे संस्थान की ओर से मधुमक्खी पालन विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा की देखरेख व मार्गदर्शन में किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि मधुमक्खी पालन से हमें न केवल शहद बल्कि दूसरे पदार्थ जैसे मोम, प्रोपोलिस, पराग, रॉयल जैली तथा मौन विष भी मिलते है जिनसे मधुमक्खी पालक अतिरिक्त आय ले सकते है। संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने प्रशिक्षणार्थियों से आह्वान किया कि प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान से वे लघु स्तर पर मधुमक्खी पालन व्यवसाय शुरु करके अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकते है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	**20.11.2020**	——	--

बहुत ही सस्ता व सरल व्यवसाय है मधुमक्खी पालन : डॉ. भूपेंद्र सिंह

हैलो हिसार न्यूज

हिसार : मधुमक्खी पालन बहुत ही सस्ता और सरल व्यवसाय है जो बहुत ही कम पैसों से शुरू किया जा सकता है। यह एक ऐसा व्यवसाय है जिसे नवयुवक व युवतियां कोई भी आसानी से कर सकता है। इस व्यवसाय के लिए जमीन की भी विशेष रूप से कोई ज्यादा जरूरत नहीं होती है। इसलिए भूमिहीन किसान भी इसे आसानी से कर सकते है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में कीट विज्ञान विभाग के सहायक निदेशक डॉ. भूपेंद्र सिंह ने कहे। वे संस्थान की ओर से मधुमक्खी पालन विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा की देखरेख व मार्गदर्शन में किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि मधुमक्खी पालन से हमें न केवल शहद बल्कि दूसरे पदार्थ जैसे मोम, प्रोपोलिस, पराग, रॉयल जैली तथा मौन विष भी मिलते है जिनसे मधुमक्खी पालक अतिरिक्त आय ले सकते है। संस्थान

के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने प्रशिक्षणार्थियों से आह्वान किया कि प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान से वे लघु स्तर पर मधुमक्खी पालन व्यवसाय शुरू करके अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकते है। प्रशिक्षण के दौरान डॉ. तरूण वर्मा ने बताया कि मधुमक्खी पालन शुरू करने के लिए अक्तूबर-नवम्बर का महीना सबसे सही समय है। उन्होंने प्रतिभागियों को मधुमक्खी पालन के लिए जरूरी उपकरणों के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। डॉ. सुरेन्द्र ने बताया कि मधुमक्खी पालन से हमें शहद तो मिलता ही है लेकिन इसके अलावा मधुमक्खियां परागण क्रिया द्वारा फसलों की पैदावार को भी कई गुणा बढ़ाकर किसनों को अप्रत्यक्ष रूप से लाभ पहुंचाती हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	**19.11.2020**	——	--

बहुत ही सस्ता व सरल व्यवसाय है मधुमक्खी पालन : डॉ. भूपेंद्र

एचएयू में मधुमक्खी पालन विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण सम्पन्न

पांच बजे न्यूज

हिसार। मधुमक्खी पालन बहुत ही सस्ता और सरल व्यवसाय है जो बहुत ही कम पैसों से शुरू किया जा सकता है। यह एक ऐसा व्यवसाय है जिसे नवयुवक व युवतियां कोई भी आसानी से कर सकता है। इस व्यवसाय के लिए जमीन की भी विशेष रूप से कोई ज्यादा जरूरत नहीं होती है। इसलिए भूमिहीन किसान भी इसे आसानी से कर सकते है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में कीट विज्ञान विभाग के सहायक निदेशक डॉ. भूपेंद्र सिंह ने कहे। वे संस्थान की ओर से मधुमक्खी पालन विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा की देखरेख व मार्गदर्शन में किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि मधुमक्खी पालन से हमें न केवल शहद बल्कि दूसरे पदार्थ जैसे मोम, प्रोपोलिस, पराग, रॉयल जैली तथा मौन विष भी मिलते है जिनसे मधुमक्खी पालक अतिरिक्त आय ले सकते है। संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने प्रशिक्षणार्थियों से आह्वान किया कि प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान से वे लघु स्तर पर मधुमक्खी पालन व्यवसाय शुरू करके अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकते है।

शहद निकालने व परीरक्षण की दी जानकारी

प्रशिक्षण के दौरान डॉ. तरूण वर्मा ने बताया कि मधुमक्खी पालन शुरू करने के लिए अक्तूबर-नवम्बर का महीना सबसे सही समय है। उन्होंने प्रतिभागियों को मधुमक्खी पालन के लिए जरूरी उपकरणों के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। डॉ. सुरेन्द्र ने बताया कि मधुमक्खी पालन से हमें शहद तो मिलता ही है लेकिन इसके अलावा मधुमक्खियां परागण क्रिया द्वारा फसलों की पैदावार को भी कई गुणा बढ़ाकर किसनों को अप्रत्यक्ष रूप से लाभ पहुंचाती हैं। डॉ. दलीप ने बताया कि जब मधुमक्खियों की संख्या कम हो जाती है तो दो डिब्बों को मिलाकर एक डिब्बा बना सकते हैं। डॉ. सुनाता यादव ने शहद निकालने की विधि व शहद के परीरक्षण के बारे में जानकारी दी। इसके साथ ही उन्होंने मधुमक्खियों को नुकसान पहुंचाने वाले कीट व बीमारियों तथा उनकी रोकथाम के बारे में विस्तार से बताया। डॉ. निर्मल कुमार ने शहद को अच्छे दाम पर बेचने के गुर सिखाए। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न जिलों सहित अन्य प्रदेशों के 40 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	**19.11.2020**	——	--

सस्ता व सरल व्यवसाय है मधुमक्खी पालन : डॉ. भूपेंद्र

एचएयू में मधुमक्खी पालन विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण का समापन

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। मधुमक्खी पालन बहुत ही सस्ता और सरल व्यवसाय है जो बहुत ही कम पैसों से शुरू किया जा सकता है। यह एक ऐसा व्यवसाय है जिसे नवयुवक व युवतियां कोई भी आसानी से कर सकता है। इस व्यवसाय के लिए जमीन की भी विशेष रूप से कोई ज्यादा जरूरत नहीं होती है। इसलिए भूमिहीन किसान भी इसे आसानी से कर सकते है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में कीट विज्ञान विभाग के सहायक निदेशक डॉ. भूपेंद्र सिंह ने कहे। वे संस्थान की ओर से मधुमक्खी पालन विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा की देखरेख व मार्गदर्शन में किया जा रहा है। संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा, डॉ. तरूण वर्मा, डॉ. सुरेन्द्र, डॉ. दलीप, डॉ. सुनाता यादव, डॉ. निर्मल कुमार ने शहद को अच्छे दाम पर बेचने के गुर सिखाए। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 40 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	19.11.2020	——	--

एचएयू में मधुमक्खी पालन विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण का समापन

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। मधुमक्खी पालन बहुत ही सस्ता और सरल व्यवसाय है जो बहुत ही कम पैसों से शुरू किया जा सकता है। यह एक ऐसा व्यवसाय है जिसे नवयुवक व युवतियां कोई भी आसानी से कर सकता है। इस व्यवसाय के लिए जमीन की भी विशेष रूप से कोई ज्यादा जरूरत नहीं होती है। इसलिए भूमिहीन किसान भी इसे आसानी से कर सकते है। ये विचार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में कीट विज्ञान विभाग के सहायक निदेशक डॉ. भूपेंद्र सिंह ने कहे। वे संस्थान की ओर से मधुमक्खी पालन विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने बताया कि मधुमक्खी पालन से हमें न केवल शहद बल्कि दूसरे पदार्थ जैसे मोम, प्रोपोलिस, पराग, रॉयल जैली तथा मौन विष भी मिलते है जिनसे मधुमक्खी पालक अतिरिक्त आय ले सकते है। संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने प्रशिक्षणार्थियों से आह्वान किया कि प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान से वे लघु स्तर पर मधुमक्खी पालन व्यवसाय शुरू करके अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकते है। प्रशिक्षण के दौरान डॉ. तरूण वर्मा ने बताया कि मधुमक्खी पालन शुरू करने के लिए अक्तूबर-नवम्बर का महीना सबसे सही समय है। उन्होंने प्रतिभागियों को मधुमक्खी पालन के लिए जरूरी उपकरणों के बारे में भी जानकारी दी। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न जिलों सहित अन्य प्रदेशों के 40 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	**19.11.2020**	——	--

बहुत ही सस्ता व सरल व्यवसाय है मधुमक्खी पालन : डॉ. भूपेंद्र सिंह

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 19 नवम्बर : मधुमक्खी पालन बहुत ही सस्ता और सरल व्यवसाय है जो बहुत ही कम पैसों से शुरू किया जा सकता है। यह एक ऐसा व्यवसाय है जिसे नवयुवक व युवतियां कोई भी आसानी से कर सकता है। इस व्यवसाय के लिए जमीन की भी विशेष रूप से कोई ज्यादा जरूरत नहीं होती है। इसलिए भूमिहीन किसान भी इसे आसानी से कर सकते हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में कीट विज्ञान विभाग के सहायक निदेशक डॉ. भूपेंद्र सिंह ने कहे। वे संस्थान की ओर से मधुमक्खी पालन विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा की देखरेख व मार्गदर्शन में किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि मधुमक्खी पालन से हमें न केवल शहद बल्कि दूसरे पदार्थ जैसे मोम, प्रोपोलिस, पराग, रॉयल जैली तथा मौन विष भी मिलते है जिनसे मधुमक्खी पालक अतिरिक्त आय ले सकते है। संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने प्रशिक्षणार्थियों से आह्वान किया कि प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान से वे लघु स्तर पर मधुमक्खी पालन व्यवसाय शुरू करके अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकते है। प्रशिक्षण के दौरान डॉ. तरूण वर्मा ने बताया कि मधुमक्खी पालन शुरू करने के लिए अक्तूबर-नवम्बर का महीना सबसे

सही समय है। डॉ. सुरेन्द्र ने बताया कि मधुमक्खी पालन से हमें शहद तो मिलता ही है लेकिन इसके अलावा मधुमक्खियां परागण क्रिया द्वारा फसलों की पैदावार को भी कई गुणा बढ़ाकर किसनों को अप्रत्यक्ष रूप से लाभ पहुंचाती हैं। डॉ. दलीप ने बताया कि जब मधुमक्खियों की संख्या कम हो जाती है तो दो डिब्बों को मिलाकर एक डिब्बा बना सकते हैं। डॉ. सुनाता यादव ने शहद निकालने की विधि व शहद के परीरक्षण के बारे में जानकारी दी। डॉ. निर्मल कुमार ने शहद को अच्छे दाम पर बेचने के गुर सिखाए। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न जिलों सहित अन्य प्रदेशों के 40 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	20.11.2020	02	08

स्वरोजगार को महिलाओं को प्रशिक्षण देगा एचएयू

हिसार | एचएयू में प्रदेश की अनुसूचित जाति व जनजाति की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और स्वरोजगार स्थापित करने के लिए दिसंबर माह में विभिन्न प्रशिक्षणों का आयोजन किया जाएगा। प्रशिक्षण सिरसा रोड स्थित केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान के सहयोग से विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में होगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	**20.11.2020**	——	--

अनुसूचित जाति व जनजाति की महिलाओं को प्रशिक्षण देगा एचएयू

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में प्रदेश की अनुसूचित जाति व जनजाति की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने व स्वरोजगार स्थापित करने के लिए दिसंबर माह में विभिन्न प्रशिक्षणों का आयोजन किया जाएगा। प्रशिक्षणों का आयोजन सिरसा रोड स्थित केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान के सहयोग से विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में होगा। यह जानकारी देते हुए संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इन प्रशिक्षणों में शामिल होने के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 27 नवंबर है। ये प्रशिक्षण विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा की देखरेख में आयोजित किए जाएंगे। प्रशिक्षण के लिए आवेदन फार्म लुदास रोड पर एचएयू के गेट नंबर 3 के नजदीक किसान आश्रम स्थित संस्थान के कार्यालय में मिलेंगे। फार्म को सभी दस्तावेजों सहित (जाति प्रमाण पत्र, पासपोर्ट साइज फोटो, आधार कार्ड, राशन कार्ड व दसवीं पास का सर्टिफीकेट) पूर्ण रूप से भरकर जमा करवाना होगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	**20.11.2020**	——	--

अनुसूचित जाति व जनजाति की महिलाओं को प्रशिक्षण देगा हकृवि

हिसार, (सोढी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में प्रदेश की अनुसूचित जाति व जनजाति की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने व स्वरोजगार स्थापित करने के लिए दिसंबर माह में विभिन्न प्रशिक्षणों का आयोजन किया जाएगा। प्रशिक्षणों का आयोजन सिरसा रोड स्थित केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान के सहयोग से विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में होगा। यह जानकारी देते हुए संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इन प्रशिक्षणों में शामिल होने के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 27 नवंबर है। ये प्रशिक्षण विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा की देखरेख में आयोजित किए जाएंगे। प्रशिक्षण के लिए आवेदन फार्म लुदास रोड पर एचएयू के गेट नंबर 3 के नजदीक किसान आश्रम स्थित संस्थान के कार्यालय में मिलेंगे। फार्म को सभी दस्तावेजों सहित (जाति प्रमाण पत्र, पासपोर्ट साइज फोटो, आधार कार्ड, राशन कार्ड व दसवीं पास का सर्टिफीकेट) पूर्ण रूप से भरकर जमा करवाना होगा। इस दौरान हरियाणा की अनुसचित जाति व जनजाति की महिलाओं को फल-सब्जियों के परीरक्षण एवं अनाज के मूल्य संवर्धित उत्पादों के लिए प्रशिक्षण दिया जाएगा, जिसमें उन्हें फल व सब्जियों के विभिन्न उत्पाद जैसे स्कैश, मुरब्बा, कैण्डी, अचार-चटनी, आदि बनाना सिखाया जाएगा। इसके अलावा अनाज के मूल्य संवर्धन के लिए अनेक प्रकार के उत्पाद बनाने सिखाए जाएंगे। यहां से प्रशिक्षण हासिल करने के बाद महिलाएं लघुस्तर पर अपना व्यवसाय शुरू कर सकती हैं और अपनी आय में वृद्धि कर सकती हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	**19.11.2020**	——	--

अनुसूचित जाति व जनजाति की महिलाओं को प्रशिक्षण देगा एचएयू

फल-सब्जियों के परीरक्षण एवं अनाज के मूल्य संवर्धित उत्पादों के लिए होगा प्रशिक्षण

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में प्रदेश की अनुसूचित जाति व जनजाति की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने व स्वरोजगार स्थापित करने के लिए दिसंबर माह में विभिन्न प्रशिक्षणों का आयोजन किया जाएगा। प्रशिक्षणों का आयोजन सिरसा रोड स्थित केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान के सहयोग से विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में होगा। यह जानकारी देते हुए संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इन प्रशिक्षणों में शामिल होने के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 27 नवंबर है। ये प्रशिक्षण विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा की देखरेख में आयोजित किए जाएंगे। प्रशिक्षण के लिए आवेदन फार्म लुदास रोड पर एचएयू के गेट नंबर 3 के नजदीक किसान आश्रम स्थित संस्थान के कार्यालय में मिलेंगे। फार्म को सभी दस्तावेजों सहित (जाति प्रमाण पत्र, पासपोर्ट साइज फोटो, आधार कार्ड, राशन कार्ड व दसवीं पास का सर्टिफीकेट) पूर्ण रूप से भरकर जमा करवाना होगा। इस दौरान हरियाणा की अनुसचित जाति व जनजाति की महिलाओं को फल-सब्जियों के परीरक्षण एवं अनाज के मूल्य संवर्धित उत्पादों के लिए प्रशिक्षण दिया जाएगा, जिसमें उन्हें फल व सब्जियों के विभिन्न उत्पाद जैसे स्क्वैश, मुरब्बा, कैण्डी, अचार-चटनी, आदि बनाना सिखाया जाएगा। इसके अलावा अनाज के मूल्य संवर्धन के लिए अनेक प्रकार के उत्पाद बनाने सिखाए जाएंगे। यहां से प्रशिक्षण हासिल करने के बाद महिलाएं लघुस्तर पर अपना व्यवसाय शुरू कर सकती हैं और अपनी आय में वृद्धि कर सकती हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	19.11.2020	——	--

अनुसूचित जाति व जनजाति की महिलाओं को प्रशिक्षण देगा एचएयू

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में प्रदेश की अनुसूचित जाति व जनजाति की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने व स्वरोजगार स्थापित करने के लिए दिसंबर माह में विभिन्न प्रशिक्षणों का आयोजन किया जाएगा। प्रशिक्षणों का आयोजन सिरसा रोड स्थित केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान के सहयोग से विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में होगा। यह जानकारी देते हुए संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इन प्रशिक्षणों में शामिल होने के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 27 नवंबर है। प्रशिक्षण के लिए आवेदन फार्म लुदास रोड पर एचएयू के गेट नंबर 3 के नजदीक किसान आश्रम स्थित संस्थान के कार्यालय में मिलेंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	**19.11.2020**	——	--

अनुसूचित जाति व जनजाति की महिलाओं को प्रशिक्षण देगा एचएयू

हिसार, 19 नवम्बर (राज पराशर) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में प्रदेश की अनुसूचित जाति व जनजाति की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने व स्वरोजगार स्थापित करने के लिए दिसम्बर माह में विभिन्न प्रशिक्षणों का आयोजन किया जाएगा। प्रशिक्षणों का आयोजन सिरसा रोड स्थित केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान के सहयोग से विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में होगा। यह जानकारी देते हुए संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डा. अशोक गोदारा ने बताया कि इन प्रशिक्षणो में शामिल होने के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 27 नवम्बर है। ये प्रशिक्षण विस्तार शिक्षा निदेशक डा. आरएस हुड्डा की देखरेख में आयोजित किए जाएंगे। प्रशिक्षण के लिए आवेदन फार्म लुदास रोड पर एचएयू के गेट नंबर 3 के नजदीक किसान आश्रम स्थित संस्थान के कार्यालय में मिलेंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	20.11.2020	05	02-03

रक्तचाप और दिल के दौरे को कम करने में अहम है बाजरा

एचएयू में बाजरा के पोषक तत्व एवं फायदे के विषय पर वेबीनार

भास्कर न्यूज | हिसार

एयूए की ओर से वेबीनार का आयोजन किया गया। जिसमें कृषि वैज्ञानिकों ने बाजरा के पोषक तत्व एवं फायदों पर विस्तार से प्रकाश डाला। विवि के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने वेबीनार में कहा कि बाजरा ऐसी फसल है, जिसे पशु और मानव दोनों के लिए उगाया जाता है। इसकी खेती कई देशों में की जाती है। बाजरा के सेवन से रक्तचाप और दिल के दौरे को कम किया जा सकता है।

इसके अलावा बाजरा मैग्नीशियम और पोटेशियम का स्त्रोत भी है। बाजरे में फाइबर की मात्रा अधिक होती है जो कोलेस्ट्रॉल को कम करने में भी मददगार होती है। इसके अलावा बाजरे में जो फाइबर पाया जाता है, वह हमारी जठरांत्र प्रणाली को स्थानांतरित करने में मदद कर सकता है और कब्ज, गैस ,पेट, फूलना जैसी समस्याओं को समाप्त करने में मदद करता है। बाजरा वजन को कम करने में भी मदद करता है। यह धीमी गति से पचाता है जिससे लंबे समय तक पेट भरा हुआ महसूस होता है। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि बाजरा की खेती कर अधिक से अधिक मुनाफा भी कमाया जा सकता है।

वेबिनार में वैज्ञानिकों ने किसानों की बाजरा संबंधी समस्याओं के समाधान भी बताए। एचएयू के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि किसानों को फसलों के बारे में जानकारी देने के लिए समय-समय पर वेबीनार आयोजित किए जाते हैं। इसके अलावा सोशल मीडिया के माध्यम से भी किसानों को फसलों में लगने वाले रोगों के बारे में जानकारी दी जा रही है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	19.11.2020	04	01-05

विशेष • कृषि विभाग और एचएयू के वैज्ञानिक किसानों को खेती के बारे में कर रहे जागरूक

मिर्च की खेती कर 180 दिन में पाए प्रति हेक्टेयर 19 क्विंटल की उपज, कमाए 70 हजार से अधिक

महबूब अली | हिसार

सब्जी वाली फसलों में मिर्च का विशेष स्थान है। इसका प्रयोग हरी मिर्च के रुप में मसाले, अचार डालने के लिए किया जा सकता है। कृषि विशेषज्ञ डा अनुराग सांगवान के अनुसार किसान मिर्च की एन. पी, 46 ए, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, आंध्र ज्योति, शिमला मिर्च- पूसा दीप्ती, अर्का मोहिनी, अर्का गौरव, अर्का बसं, सिंधुर आदि की बुवाई कर प्रति हेक्टेयर 19 क्विंटल तक की उपज पा सकते हैं। एक हेक्टेयरमे 70 हजार से अधिक की आमदनी किसान कर सकते है। सभी किस्म 180 से लेकर 200 दिन में पककर तैयार हो जाती है। एचएयू के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि मिर्च की खेती कर किसान मुनाफा कमा सकते हैं। किसानों को वेबिनार के माध्यम से भी मिर्च की रोग रहित खेती के बारे में टिप्स दिए जा रहे हैं। इसके अलावा विवि के वैज्ञानिक भी लगातार किसानों के संपर्क में है।

जानिए... मिर्च के प्रमुख कीट एवं रोकथाम

कृषि विशेषज्ञ डॉ अनुराग सांगवान के अनुसार

दीमक : जमीन में रहकर हल्के भूरे कीट तनों व जड़ों को काट देते हैं व पौधे मुरझाकर सूख जाते हैं।
रोकथाम : खेत में गली-सड़ी गोबर की खाद का ही प्रयोग करें। कच्ची खाद का नहीं। पिछली फसल के अवशेष व ठूंठों को निकाल दें।

चुरड़ा व अष्टपदी : ये कीट पत्तों से रस चूसते हैं व पत्ते पीले पड़ जाते हैं और पौधे कमजोर हो जाते हैं।
रोकथाम : चुरड़ा को रोकने के लिए 400 मिली मैलाथियान 50ईसी का छिड़काव 200-250 ली. पानी में मिलाकर प्रति एकड़ 15-20 दिन के अंतर में करें। अष्टपदी की रोकथाम के लिए 300 मिली प्रैम्पट 20 ईसी प्रति एकड को 200 लीटर पानी में मिलाकर फूल आने से पहले छिड़काव करें।

जानिए... प्रमुख बीमारियां और उनकी रोकथाम के उपाए

एचएयू में लगाई गई मिर्च की खेती।

आर्दगलन : पौधशाला की यह गंभीर बीमारी है। इस रोग से पौधे अंकुरण से पहले व बाद में भी मर जाते हैं।
रोकथाम : इसकी रोकथाम के लिए बीज का उपचारं बिजाई से पहले 2.5 ग्राम कैप्टान या थिराम नामक दवा से प्रति किलो. बीज के हिसाब से करें व उगने के बाद पौधों को गिरने से बचाने के लिए 0.2% कैप्टान छिड़काव से नर्सरी की सिंचाई करें।

फल का गलना व टहनी मार रोग : इस रोग से धब्बे फलों पर पड़ जाते हैं व बाद में फल गलने लग जाते है और टहनियां ऊपर से सूखने लग जाती है। यह रोग फफूंद से होता है।
रोकथाम: 400 ग्राम कॉपरआक्सीक्लोराइड या जिनेब या इंडोफिल एम-45को 200 ली. पानी में मिलाकर प्रति एकड़ के हिसाब से 10-15 दिनों के अंतर में छिड़कें।

पत्ती मरोड और मोजैक : इस रोग के प्रकोप से पत्तियां मोटी, मुड़ी हुई हो जाती हैं व पौधों की तबढ़वार रुक जाती है। तने पर धारियां पड़ जाती है।
रोकथाम : इसकी रोकथाम के लिए रोग रहित व स्वस्थय बीज लें। रोगी पौधों को आरंभ में ही निकालकर नष्ट कर दें। बीमारी फैलाने वाले कीड़ों की नर्सरी व खेतों में रोकथाम करें।